प्रातःक्लास 29/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे जन्म–जन्मांतर और सत संगों में गये हैं और यहां भी आये हुये हैं। वास्तव में इसको भी सतसंग कहा जाता। सत का संग तारे। बच्चों के दिल में आता होगा पहले हम भक्ति मार्ग के सतसंगों में जाते थे और अभी यहां बैठे हो। रात–दिन का फ़र्क भासता है। यहां पहले–2 तो बाप का प्यार मिलता है। फिर बाप को बच्चों का प्यार भी मिलता है। अभी इस जन्म में अभी तुम्हारी चेंज हो रही है। तुम समझ गये हो हम आत्मा हैं न कि शरीर। शरीर नहीं कहेगा कि हमारी आत्मा। आत्मा कह सकती है हमारा शरीर। आत्मा जानती है हम शरीर लेता हूँ। अभी बच्चे समझते हैं जन्म–जन्मांतर तो वह साधु–महात्मा और करते आये आजकल फिर फैशन पड़ा है साँई बाबा, महर बाबा..... वह भी सभी जिस्मानी ही हो गये। जिस्मानी प्यार में सुख तो होता ही नहीं। अभी तुम बच्चों का है रूहानी प्यार। रात–दिन का फ़र्क है। यहां तुमको समझ मिलती है। वहां तो बिल्कुल है बेसमझ। अभी तुम समझते हो आकर हमको बाबा पढ़ाते हैं। वह सभी का बाप है। मेल–फीमेल सभी अपन को आत्मा समझते हैं। बाबा बुलाते भी हैं हे बच्चों। बाप रेसपॉण्ड करेंगे है बच्चों, तो फिर बच्चे भी रेसपॉण्ड करेंगे ओ बाबा। यह है बाप और बच्चों का मेला। आत्माओं और परमात्मा का मेला। यह बच्चे जानते हैं यह बाप और बच्चों का वा आत्माओं व परमात्मा का मेल(ा) एक ही बार होता है। बाबा–2 कहते रहेंगे। बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। बाबा कहने से ही वर्सा याद आवेगा। तुम छोटे बच्चे तो नहीं हो। बाप की बोझ बच्चों पर झट पड़ती है। बाबा से क्या वर्सा मिलना है। वह छोटे बच्चे तो समझ न सके। यहां तो तुम जानते हो बाबा के पास आये हैं। बाप कहेंगे हे बच्चों। तो इसमें सभी बच्चे आ गये। बाप समझाते हैं जो भी आत्माएं हैं सभी घर से यहां आते हैं पार्ट बजाने। नम्बरवार बाप से जुदा होकर यहां पार्ट बजाने आये हैं। कौन–2 कब पार्ट बजाने आते हैं यह भी बुद्धि में है। बाप समझाते हैं सभी की सेक्शन अपनी–2 है। जहां से आते हैं फिर पिछाड़ी में अपने–2 सेक्शन में जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप किसको भेजते नहीं हैं। ऑटोमेटकली यह ड्रामा बना हुआ है। हरेक अपने–2 धर्म में आते रहते हैं। बुद्ध का धर्म स्थापन नहीं हुआ है तो कोई उस धर्म का आवेगा नहीं। पहले–2 सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी ही आते हैं। जो बाप से अच्छी रीत पढ़ते हैं वही नम्बरवार सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी में शरीर लेते हैं। अभी जो इस समय हैं वह हैं सूर्यवंशी। वहां विकार की तो बात ही नहीं। योगबल से आत्मा आकर गर्भ में प्रवेश करती है। उस समय समझेंगे मेरी आत्मा इस शरीर में जाकर प्रवेश करती है। बूढ़ समझते हैं हमारी आत्मा योगबल से जाकर यह शरीर लेगी। मेरी आत्मा अभी पुनर्जन्म लेती है। वह माँ–बाप भी समझते हैं हमारे पास बच्चा आता है। उनको बच्चा होने वाला है। तो मालूम पड़ेगा बच्चे की आत्मा आ रही है। जिसका सा. भी होता है। वह अपने लिए समझते हैं कि हम जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हैं। उनका बच्चा होने वाला होगा तो बाप समझेगा स्त्री के गर्भ में आत्मा आकर प्रवेश किया है। महसूस होगा ना। सा. होता है बच्चा होने वाला है। ऊपर से ह(ा) आत्माएं आवेंगी। नये–2 आते हैं। समझते हैं योगबल से आत्मा आकर इनकी गर्भ में प्रवेश करती है। शुरू से ही जान जाते हैं इनमें प्रवेशता हुई है। समझ है बच्चा कैसे आता है, कैसे प्रवेश करते हैं। समझते हैं हमको बच्चा होने वाला है एक। जब 60 वर्ष के होते हैं उस अवस्था में बच्चा पैदा होता है। यह भी विचार उठते हैं ना। ज़रूर वहां का कायदा होगा बच्चा किस आयु में आवेगा। वहां तो सभी रेगुलर चलता है ना। वह तो आगे चलकर मालूम पड़ेगा। ऐसे तो नहीं 15/20 वर्ष में कोई बच्चा होगा जैसे कि यहां होता रहता है। नही। वहां आयु ही 150 वर्ष होती है तो बच्चा कब आवेगा। जब फुल जवानी होती है। आधा लाइफ से थोड़ा आगे। उस समय बच्चा आता है; क्योंकि वहां आयु बड़ी होती है। एक ही तो बच्चा आना है। फिर बच्ची भी आनी है। कायदा होगा। पहले बच्चा या बच्ची की आत्मा आती है? विवेक कहते हैं पहले बच्चे की ही आत्मा आनी चाहिए। पहले मेल पीछे फिमेल। 8/10 वर्ष का फ़र्क भी होता होगा। दोनों की आयु बड़ी है तो आने(जन्म) में भी ज़रूर फ़र्क रहेगा। 8/10 वर्ष देरी से

आवेंगे। आगे चल तुम बच्चों को सब सा. होना है। कैसे वहां के रसम–रिवाज़ हैं। यह सभी बातें नई दुनियां के लिए बाप बैठ समझाते हैं। बाप ही नई दुनियां की स्थापना करने वाला है। रसम–रिवाज़ भी ज़रूर सुनाते होंगे। आगे चलकर बहुत सुनावेंगे और सा. भी होता रहेगा। बच्चे–बच्ची कैसे पैदा होते हैं। कोई नई बात नहीं। तुम तो ऐसी जगह जाते हो जहां कल्प–2 जाना ही पड़ता है। वैकुण्ठ तो अभी नज़दीक आ गया ना। अभी बिल्कुल ही नज़दीक ही आकर पहुँचे हो। हरेक चीज़ तुमको नज़दीक ही देखने में आवेंगे। जितना तुम योग में मज़बूत हो जावेंगे। अनेक बार तुमने पार्ट बजाया है। अभी तुमको समझ मिलती है जो ही तुम साथ ले जावेंगे। वहां के रसम–रिवाज़ बाप को समझानी तो यहां ही है ना। सीखना यहां ही होता है। सभी को सा. होगा। वहां की क्या रसम–रिवाज़ होगी। सभी जान जावेंगे। शुरू में तुमको सा. हुआ था कैसे शादी होगी। कैसे बच्चा पैदा होंगे सभी सा. होता था ना। उस समय तो अजन तुम अलफ बे पढ़ते थे। फिर लास्ट नम्बर में भी तुमको सा. होनी चाहिए। सो तो बाप बैठ सुनाते हैं। वह सभी देखने की चाहना तुमको यहां ही होगी। समझेंगे कहां शरीर जल्दी न छूट जाये। सभी कुछ देखकर जावें। इसमें आयु बढ़ाने लिए चाहिए योगबल जो बाप से हम सभी कुछ सुने। सभी कुछ देखें। जो पहले से गये उनका चिंतन नहीं करना है। वह तो ड्रामा का पार्ट है। तकदीर में नही था ज़्यादा बाप से लेना; क्योंकि जितना–2 तुम सर्विसएबुल बनते हो बाप को बहुत–2 प्यारे लगते हो। जितना सर्विस करते हो, जितना बाप को याद करते हो वह याद जमती रहेगी। तुमको बहुत मज़ा आवेगा। अभी तुम बनते हो ईश्वर के संतान। बाप कहते हैं तुम आत्माएं हमारे पास थे ना। भक्ति मार्ग में मुक्ति के लिए ही बहुत परिश्रम करते हैं। जीवन मुक्ति को तो जानते ही नहीं। उन सन्यासी गुरु लोंगो को तो यह इश्वरीय ज्ञान है नहीं। यह बहुत ही लवली ज्ञान है। बहुत लव होता है। बाप बाप भी है, टीचर भी है सतगुरु भी है। सच्चा–2 सुप्रीम बाबा है जो हमको 21 जन्म लिए सुखधाम ले जाते हैं। आत्मा ही दुःखी होती है ना। दुःख–सुख आत्मा ही महसूस करती है। कहा भी जाता है पापात्मा–पुण्यात्मा। अभी बाप आये हैं हमको सभी दुःखों से दूर करने। अभी तुम बच्चों को बेहद में जाना है। सभी सुखी हो जावेंगे। सारी दुनियां ही सुखी हो जावेगी। ड्रामा में पार्ट है। उनको भी समझ गये हो। तुम कितना खुशी में रहते हो। बाप आया हुआ है हमको स्वर्ग़ में ले जाने लिए। हम सभी आत्माओं को स्वर्ग़ ले जावेंगे। बाप धैर्य देते हैं मीठे–2 बच्चों मैं तुमको सभी दुःखों से दूर करने आया हूँ। तो कितना ऐसे बाप पर प्यार होना चाहिए। सभी सम्बंधियों ने तुमको दुःख दिया है। यह है ही सुखदाई सम्बंध। गरुण पुरान में दिखाते हैं ना बिच्छू–टिण्डन बनते हैं, यह बनते हैं। फिर कहते हैं मनुष्य का जीवन सबसे उत्तम है। 84 लाख तो वैरायटी है। शास्त्रों में कितना गपोड़ा लगा दिया है। ऐसी–2 बातें सुन तुम्हारी बुद्धि क्या हो गई है। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि बन गये हो। सुनने में तुमको बड़ी खुशी होती है। दुःख की बातें ही सुनते आये हैं। अभी बाप सभी बातें समझा रहे हैं। सारा सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। बाप ने समझाया है। अनेक बार समझाया है और हमको चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। तो जो बाप हमको ऐसा विश्व का मालिक बनाते हैं उन पर कितना होना प्यार चाहिए। एक बाप को ही याद करते हो। बाप के सिवाय और कोई से सम्बंध ही नहीं। आत्मा को ही समझाना होता है। हम सुप्रीम बाप के बच्चे हैं। अभी हमको जैसे कि रास्ता मिला है फिर औरों को भी सुख का रास्ता बताना है। आधा कल्प के लिए। और ही मुना कल्प के लिए। तुम पर भी कुर्वान जाते हैं ना; क्योंकि तुम बाप को संदेश बताये सभी के दुःख दूर करते हो। तो समझते हैं इन्हों को यह नॉलेज सुप्रीम बाप से ही मिलती है। यह फिर हमको पैगाम देते हैं। हम फिर औरों को पैगाम देते हैं। पैगाम पहुँचातें, बाप का परिचय देते, सभी बच्चों को जगाते रहते हैं अज्ञान नींद से। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। ज्ञान और भक्ति अलग–2 है। ज्ञान माना ज्ञान। भक्ति माना भक्ति। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। वही ज्ञान सिखलावेंगे ना। अभी तुम बच्चों को सिखला रहे हैं। तुम्हारे दिल में आता है बाबा हर 5000 वर्ष बाद आकर हमको जगाते हैं। जो दीवा है

इसमें घृत बाकी ज़रा रह गया है। बुझने पर आ गया है; इसलिए अभी फिर बाप ज्ञान घृत डाल दीवा जगाते हैं। आत्मा प्रज्वलित होती है जब बाप को याद करती है। आत्मा में जो कट चढ़ी हुई है वह उतरेगी बाप को याद करने से। इसमें ही माया की लड़ाई चलता है। माय(ा) घड़ी–2 भुला देती है और कट उत(र)ना बंद हो जाता है। बल्कि जितने उतरे थे उससे भी जास्ती चढ़ जाती है। बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करो। तो तुम्हारे कट उतर जावेगी। इसमें बड़ी मेहनत है। माया के तूफान बहुत आते हैं। जो कशिश करते हैं; इसलिए बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। हम आत्मा हैं। बाबा के पास शरीर सहित तो जा नहीं सकेंगे। शरीर से अलग होकर ही जाना है। आत्मा को देखने से ही कट उतरेगी। शरीर को देखने से कट चढती है। कब चढ़ती है कब उतरती है। यह चलता रहता है। कब नीचे कब ऊपर बड़ा नाजुक रास्ता है। यह होते–होते कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में पाते हैं। मुख्य आँखें ही हर बात में धोखा देती हैं; इसलिए बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो और दूसरे को भी आत्मा देखो। फीमेल को देखने से आँखों से बहुत धोखा होती है; इसलिए शरीर होते हुये भी देखना नहीं है। हमारी बुद्धि सुखधाम और शान्तिधाम में लटकी हुई है। और दैवी गुण भी धारण करनी है। भोजन भी शुद्ध। देवताओं का पवित्र भोजन होता है ना। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। देवताएं कब गंदी चीज़ थोड़े ही खाते होंगे। वैष्णव का भी मंदिर है। जिसको ना. भी शायद कहते हैं। अभी ल.ना. तो साकार ठहरे। उनको 4 भुजा होनी न चाहिए; परंतु भक्ति मार्ग में उनको भी चार भुजा देते हैं। इसको कहा जाता है बेहद का अज्ञान। समझते नहीं हैं चार भुजा वाला तो कोई मनुष्य हो नहीं सकता। सतयुग में भी दो भुजा वाले होते हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने पत्थर बुद्धि हो जाते हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। ब्रह्मा को भी दो भुजाएं हैं। ब्रह्मा की बेटी सरस्वती उनको फिर मिला कर चार भुजा दे दिये हैं। अभी सरस्वती कोई स्त्री नहीं थी। यह है प्रजापिता ब्रह्मा। जितने बच्चे एडॉप्ट करते जाते हैं उतनी ही भुजाएँ बढ़ती जाती हैं। ब्रह्मा को ही आठ भुजा, 10 भुजा, 20 भुजाएँ कहते हैं। विष्णु वा शंकर की नहीं। ब्रह्मा के बहुत भुजाएं कहते हैं; क्योंकि बच्चे बढ़ते जाते हैं ना। भक्ति में क्या–2 करते रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं। बाप आकर बच्चों को समझू बनाते हैं। तुम कहते हो बाबा ने हमको आकर कितना समझदार बनाया है। शिवबाबा शिवबाबा तो कहते थे ना। वह निराकार था। अभी भी तुम समझते हो वह निराकार है; परंतु वह तो हमारा बाप है यह तो समझना चाहिए ना। किसका बाप है? सभी आत्माओं का। मनुष्य कितने पत्थर बुद्धि हैं। कहते हैं हम शिव का भक्त था। अच्छा शिव को क्या समझते थे। अभी तो तुम समझते हो शिवबाबा सभी आत्माओं का बाप है; इसलिए सभी उनकी पूजा करते हैं। पहले–2 तो तुम भी शिव की पूजा करते थे। फिर आस्ते–2 कोई किसकी पूजा, कोई किसकी पूजा करते वृद्धि को पाते जाते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मुख्य बात तो बाप कहते हैं मामेकं याद करो। तुमने बुलाया भी है हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। सभी पुकारते ही रहते हैं। पतित–पावन..... यह भी गाते रहते थे। बाबा को थोड़े ही मालूम था ऐसे ही प्रवेश करेंगे। कितना वण्डर लगता है। कब ख़्याल में भी न था। पहले तो मुँझ गये यह क्या होता है। मैं किसको देखता हूँ तो बैठे–2 उनको कशिश हो जाती है यह क्या होता है। यह शिवबाबा कशिश करते थे। उनको तो यह भी पता नहीं पड़ता था। सामने बैठो तो ध्यान में चले जाते थे। वायरे हो गये यह क्या है। इन बातों को समझने के लिए एकांत चाहिए। तब वैराग्य आने लगा। कहां जाऊँ। अच्छा बनारस जाता हूँ। यह उनकी कशिश थी। जो इसको भी कराते थे। इतने सभी बड़े कारोबार सभी छोड़ कर गया। इन बिचारों को क्या पता कि बनारस में क्यों जाते हैं। फिर वहां जाकर बगीचे में ठहरा। वहां भी पेंसिल हाथ में उठाकर दीवारों पर चक्र बैठ निकालाता था। बाप क्या कराते थे कुछ पता नहीं पड़ता था। रात को नींद आ जाती थी तो समझतना था कहां उड़ गया हूँ फिर जैसे कि नीचे आ जाता था। कुछ पता नहीं क्या हो रहा है। पहले तो

अलफ़ का ज्ञान बुद्धि में बैठे। शास्त्रों का ज्ञान तो था। अहम् ब्रह्मास्मि। माया के भी हम मालिक हैं ऐसे भी समझाते थे। तब कहते हैं तुम्हारा पहला ज्ञान बिल्कुल ही डिफरेंट था। बुद्धि में शास्त्रों का भूसा था ना। वह कोई जल्दी थोड़े ही निकलता है। इनका भी देरी से निकला। शुरू में कितने सा. होते थे। बच्चियाँ बैठी–2 चली जाती थी। बाबा ने ख़ास बच्चों का स्कूल बनाया था। अभी फिर ख़्याल होता है बच्चों का क्लास बनावें। वहां छोटे–2 बच्चे थे। अभी तो बड़े बच्चों का बनावें। ऐसे तो नहीं होगा फिर ध्यान में चले जावेंगे। यह तो बड़ी कुमारियाँ आदि हैं। पता नहीं क्या पार्ट चलेगा। उस समय तुम्हारा भी नामाचार हो जावेगा ना। शुरू में तुमने बहुत ही खेल पाल देखे हैं। कहेंगे जो हमने देखा है सो तुमने नहीं देखा। अभी भी बाप कहते हैं जिन्होंने देखा वह तो चले गये अभी फिर जो तुम देखेंगे यह फिर वह नहीं देखेंगे। पिछाड़ी में बाप बहुत ही सा. करेंगे। नज़दीक होते जावेंगे ना। मिरुवा मौत मलूका शिकार। तुम मलूक बन जाते हो। प्रैक्टिकल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मलूक बन जाते हो। जो फिर सा. करते हो पिछाड़ी में कैसे अवस्था रहती है। बिल्कुल निश्चय बुद्धि। भल कुछ भी हो जाये ज़रा भी घबरायेंगे नहीं। ऐसी अवस्था आने वाली है; इसलिए अच्छी रीत समझते जाओ। टाइम बहुत थोड़ा है। पुरुषार्थ करते जाओ। यह है ईश्वरीय परिवार। बाहर में तो यह परिवार नहीं रहता। करके एक घंटा आपस में मिलते हैं। सेंटर पर जाते हैं बाकी तो असुरों के साथ रहना पड़ता है। जंगली जनावर बंदर भूलरां(भूले ही) देखते रहेंगे। शास्त्रों में भी क्या–2 बातें लिख दी हैं। अभी तो तुम समझते हो भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते कितना टाइम वेस्ट होता गया। वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ इनर्जी, वेस्ट ऑफ मनी किया है। वाह्यात बातें सुनते–2 सत–2 करते खुश होते थे। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के कथाएं। भक्ति में क्या लगा पड़ा है। अभी फिर ज्ञान में चकना चूर बनना है। भक्ति मार्ग में भी कोई बहुत तीखे भक्त होते हैं। उनको नवधा भक्ति कहते हैं। यह फिर है नवधा योग। जिससे (पाप) कटते हैं। नॉलेज तो बहुत ही सहज है। बच्चों को समझाते तो बहुत हैं। अभी कोई विकर्म नहीं करना है। रावण राज्य योगबल से ख़त्म हो जाता जावेगा। ड्रामा अनुसार रावण राज्य ख़त्म होना ही है। सतयुग में रावण होता ही नहीं। सूर्यवंशी ही राजधानी चलती है। वहां यह भी पता नहीं रहता कि हमारे पीछे चन्द्रवंशी आवेंगे। फिर यह होंगे कुछ भी पता नहीं। यहां है दुःख की दुनियाँ। वहां है सुख की दुनियां। यह फ़र्क हो जाता। मुँझना न चाहिए। जो वहां जाने वाले ही नहीं हैं वह मुँझते हैं। उनका भी दोष नहीं; इसलिए तुम कोई बात में बिगड़ते नहीं हैं। जानते हो बिचारे बेसमझ हैं। प्राईममिनिस्टर आ बुझ है। उनको वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी का ज्ञान ही नहीं। चक्र को जानते ही नहीं। अभी तुमको कितनी समझ मिली है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम 84 का चक्र पूरा करके आये हैं। अगर कम चक्र लगाया है तो याद में भी कम रहेंगे। जितना चक्र कम लगाया होगा उतना ही योग में कम रहेंगे; क्योंकि पीछे आये हैं ना। किसको समझा नहीं सकते हैं। आवेंगे भी पीछे। त्रेता के पीछे। तुम बच्चों को बेहद बाप द्वारा बेहद की समझ मिलती है। नटशेल में बीज और झाड़ को समझ गये हो। स्वगदर्शनचक्र बुद्धि में फिरता रहता है। इस चक्र से तुम्हारे पाप कटते हैं। स्वदर्शनचक्र फिराते रहो पाप कट होते जावेंगे। उन्होंने फिर कृष्ण को स्वदर्शनचक्र दिखाया है जिससे सभी का गला कटता गया। ऐसी तो बात है नहीं। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अंत में स्वदर्शनचक्र धारी बन रही है। तो पाप कट जाये। ज्ञान भी है स्वदर्शनचक्र भी फिराते हैं। शिवबाबा तो चक्र नहीं फिराते हैं। ब्राह्मण फिराते हैं। जिससे विकर्म विनाश हो। फिर तुम देवता बन जावेंगे। स्वदर्शनचक्र का तुमको ज्ञान मिला है। यह (देवी–देवता) बनने लिए। यह है एमऑबजेक्ट। तुम जानते हो हम स्वदर्शनचक्र फिरा कर देवता बन रहे हैं। फिर 5000 हज़ार वर्ष बाद तुमको यह ज्ञान मिलेगा। देवताओं को भी यह ज्ञान नहीं है। तो कहेंगे यह फिर क्या कहते हैं। अपने लिए समझते हैं हमारे में ज्ञान है। बाकी सभी के लिए कहते हैं कोई में ज्ञान नहीं है; इसलिए कोई की भी आँख नहीं डूबती। जो अच्छे बच्चे समझदार हैं वह तो झट समझ जाते हैं। कोई भी संशय होगा तो निकल जावेंगे। रिफ्रेश हो जावेंगे। बाप मुँझ निकाल देते हैं; इसलिए ही मधुबन का गायन है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।